डॉ. क्रेग कीनर , रोमन्स, व्याख्यान 3, रोमियों 1:2-17

© 2024 क्रेग कीनर और टेड हिल्डेब्रांट

यह रोमन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह सत्र संख्या 3, रोमियों 1:2-17 है।

पिछले सत्र में, हमने रोमनों की पुस्तक या कम से कम एक विषय का सर्वेक्षण किया जो रोमनों की पुस्तक में चलता है।

और हमने रोमियों 1:1 को भी देखा। अब हम आगे बढ़ेंगे और अध्याय एक के कुछ और अंश देखेंगे। पॉल को सुसमाचार के लिए, यीशु के बारे में अच्छी खबर के लिए अलग किया गया है। और यह वह अच्छी ख़बर है जिसका वादा पहले से किया गया था।

खैर, कोई आश्चर्य नहीं कि वह ऐसा कर सकता है, हम जानते हैं कि वह यशायाह 52:7 पर निर्भर करता है, जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, मोक्ष की अच्छी खबर, शांति की अच्छी खबर, और अच्छी खबर कि भगवान शासन करता है, यानी राज्य की अच्छी खबर। तो, इस खुशखबरी का वादा पहले ही कर दिया गया था। यह भविष्यवक्ताओं के संदेश पर वापस जाता है।

पॉल कहते हैं, यह पहले से ही पुराने नियम में है, हालाँकि अध्याय 16 श्लोक 25 से 26 में, जिसे मैं रोमियों के मूल पाठ का हिस्सा मानता हूँ, अध्याय 16 में पहले से ही, पॉल कहता है कि यह पहले से ही पुराने नियम में था, लेकिन यह वहां एक रहस्य था. यह वहां था, लेकिन लोगों ने इसे नहीं देखा, या कम से कम लोगों ने इसे इस तरह के स्तर पर नहीं देखा। तो, पॉल कहते हैं कि यह पहले से ही था और यह भविष्यवक्ताओं के माध्यम से दिया गया था।

भविष्यवक्ताओं के माध्यम से मध्यस्थता की भाषा इस प्रेरणा को इंगित करती है कि ईश्वर ने भविष्यवक्ताओं को प्रेरित किया। परमेश्वर भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बोल रहा था। वह पवित्र धर्मग्रंथों की बात करता है।

खैर, यह रोमन में एक विषय है। रोमियों को लिखे अपने पत्र में पॉल धर्मग्रंथों का बहुत अधिक उद्धरण देगा। तो, यह सब पहले से ही मौजूद है।

वह इसे पुराने नियम से समझाएगा। यह वहां था, लेकिन इसे समझने की जरूरत थी। और यह कुछ ऐसा है जो पॉल उन्हें इसे बेहतर ढंग से समझने में मदद करेगा।

अब वह अपने सुसमाचार का विषय अध्याय एक, श्लोक तीन और चार में देने जा रहा है। सुसमाचार का विषय उसका पुत्र है। और वह उसके बारे में दो तरह से बात करने जा रहा है।

देह के अनुसार, वह दाऊद का वंशज है। आत्मा के अनुसार, वह परमेश्वर का पुत्र है। अब उसका मतलब क्या है? क्या इसका मतलब यह है कि यीशु का एक हिस्सा मानवीय था और यीशु का

एक हिस्सा दिव्य था? जब हम अवतार की बात करते हैं तो वास्तव में हमारा मतलब यह नहीं है, बल्कि इसे देखने के दो अलग-अलग तरीके हैं।

देह के अनुसार, जातीय रूप से, यीशु डेविड के वंशज थे। लेकिन आत्मा के द्वारा, उसे परमेश्वर का पुत्र घोषित किया गया, पॉल कहता है, मृतकों में से पुनरुत्थान के द्वारा। पहले से ही आपके पास ईश्वर के पुत्र के रूप में मसीहा के बारे में कुछ पुराने नियम के ग्रंथ हैं, जिन्हें नए नियम, अधिनियम 2, पद सात और कुछ अन्य ग्रंथों में समझाया गया है।

प्रेरितों के काम अध्याय 13 में, क्या मैंने कहा, कि भजन 2, श्लोक सात, जैसा कि प्रेरितों के काम 13 में बताया गया है, जैसा कि इब्रानियों 1 में बताया गया है, कहा गया है कि यीशु को परमेश्वर पिता द्वारा उसके उत्कर्ष पर, उसके सिंहासन पर बैठने पर खुले तौर पर परमेश्वर का पुत्र दिखाया गया था, जब वह मृतकों में से जीवित हो उठा और पिता के दाहिने हाथ सिंहासन पर बैठा। अब, इसका मतलब यह नहीं है कि उससे पहले उसे भगवान का पुत्र कहना अनुचित है। उदाहरण के लिए, ल्यूक अध्याय एक में ल्यूक ऐसा करता है।

लेकिन यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में महिमामंडित किया गया है। उसके पुनरुत्थान की शक्ति के साथ, उसे सार्वजनिक रूप से ईश्वर का पुत्र घोषित किया गया है, जो यहाँ मुद्दा है। खैर, शक्ति के साथ अक्सर पुनरुत्थान भी जुड़ा रहता है।

वहाँ नियमित रूप से यहूदी प्रार्थना होती थी। यह 18 आशीर्वादों में से एक है, शेमोना एस्रेई , जो पुनरुत्थान द्वारा अपनी शक्ति को प्रकट करने वाले ईश्वर की बात करता है। और पॉल का कहना है कि यह पवित्रता की भावना से किया गया था।

खैर, यह शक्ति से जुड़ा है। ईश्वर की आत्मा को बाद में रोमियों 15.13, 15.19, 1 कुरिन्थियों 2.4, और 1 थिस्सलुनीकियों 1.5 में भी शक्ति के साथ जोड़ा गया है। और रोमियों 8.11 में आत्मा को पुनरुत्थान के साथ जोड़ा गया है। तो, इसमें से कोई भी आश्चर्य की बात नहीं है। लेकिन पवित्रता की भावना रुआच हाकोडेश , पवित्र आत्मा का वर्णन करने का एक और तरीका था।

अब, पवित्र आत्मा वाक्यांश का उपयोग पुराने नियम, यशायाह 63 और भजन 51 में केवल दो बार किया गया है। लेकिन इसका उपयोग प्रारंभिक यहूदी धर्म में भगवान की आत्मा का वर्णन करने के एक तरीके के रूप में बहुत आम तौर पर किया जाता था, जिसका अर्थ भी यही है। पुराना वसीयतनामा। रोमियों 1:5-6 पौलुस की बुलाहट के पीछे घूमता है।

अब, उन लोगों के लिए जो बहुत ही वाक्पटु ग्रीक भाषा से बहुत परिचित हैं, जिसे एक काल कहा जाता है, आप किसी चीज़ से शुरुआत करेंगे और फिर अंत में, आप उसके चारों ओर वापस घूमेंगे। यह तकनीकी रूप से ग्रीक में एक अवधि नहीं है, लेकिन पॉल इस तरह से बोल रहा है कि लोग इसकी सराहना करेंगे कि यह बहुत सावधानी से तैयार किया गया एक परिचय है। पॉल वास्तव में अपना नाम बता सकता था और फिर रोम के विश्वासियों से कह सकता था।

लेकिन वह, फिर से, उस हिस्से पर आगे बढ़ने से पहले कुछ हद तक खुद का वर्णन कर रहा है। वह कहते हैं हम. क्या उसका मतलब स्वयं और रोमन विश्वासियों से है? हमें प्रेरिताई प्राप्त हुई है, प्रेरिताई का अनुग्रह, व्यापक अर्थ में, वह उनके साथ अपनी पहचान बना रहा है।

या क्या उसका मतलब सिर्फ खुद से है? कभी-कभी आपके पास एक पत्र-पत्रिका होती है। तो यह बहस का विषय रहा है। लेकिन छंद छह में, वह अन्यजातियों के बारे में बात करता है जिनके बीच आप बुलाए गए हैं।

तो, यह केवल एक पत्र-पत्रिका हो सकती है। लेकिन वह बोलता है कि हमारा मतलब शायद पॉल है, हालाँकि एक अर्थ हो सकता है जिसमें उन्होंने इसे साझा किया हो, लेकिन शायद उसका मतलब पॉल हो। हमें प्रेरिताई का अनुग्रह प्राप्त हुआ है।

खैर, अन्यत्र, बाद में रोमियों 12 में, उदाहरण के लिए, पॉल अनुग्रह द्वारा उपहार प्राप्त करने की बात करता है। हम सेवा करने में सक्षम हैं क्योंकि भगवान ने हमें इसकी कृपा प्रदान की है। उनका न केवल यह मतलब था कि हम उस अनुग्रह के पात्र नहीं हैं, जिसका अर्थ यह है, बल्कि एक अर्थ में उन्होंने हमें इसके साथ सशक्त भी बनाया।

वह अनुग्रह का उपयोग इस तरह से करता है जैसे यह कुछ ऐसा है जिसे करने के लिए ईश्वर ने हमें सक्षम बनाया है। इसलिए, परमेश्वर ने पॉल को प्रेरितत्व का अनुग्रह दिया। ईश्वर ही वह है जिसने उसे यह शक्ति दी।

कार्य का श्रेय ईश्वर ही लेता है। और अपने प्रेरिताई कार्य में उसने जो मिशन दिया है वह अन्यजातियों के बीच उसके नाम की खातिर विश्वास की आज्ञाकारिता लाना है। विद्वानों ने इस बात पर बहस की है कि इसका क्या मतलब है।

आज्ञाकारिता जो विश्वास उत्पन्न करती है, आज्ञाकारिता जो विश्वास से उत्पन्न होती है, इस पर निर्भर करती है कि आप ग्रीक व्याकरण को कैसे लेते हैं, यह इनमें से कोई भी हो सकता है, या आज्ञाकारिता जो विश्वास है। हालाँकि इस पर बहस चल रही है, कि आज्ञाकारिता और विश्वास के बीच कोई संबंध है, इस पर वास्तव में बहस नहीं हुई है। हम इसे रोमनों में अन्यत्र देखते हैं।

हम इसे रोमनों के निष्कर्ष में देखते हैं, जिसे मैं फिर से प्रामाणिक रूप से रोमनों का हिस्सा मानता हूं। पॉल के लिए वह विश्वास कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जहाँ आपने बस एक बॉक्स चेक किया और कहा, ठीक है, मैं उस पर विश्वास करता हूँ। और इसलिए, तकनीकी रूप से मुझे स्वर्ग जाना है।

और मैं इस बारे में तब सोचूंगा जब मैं मरने वाला हूं। पौलुस का विश्वास से यह मतलब नहीं था। उनका मतलब नाममात्र का ईसाई होना नहीं था।

उनका मतलब था कि हम यीशु पर विश्वास करते हैं। हम उसके दावे की सच्चाई पर अपना जीवन दांव पर लगाते हैं। इसलिए हम अपना जीवन उसे सौंप देते हैं।

वह हमें किससे बचाता है? वह हमें सिर्फ पाप के दंड से ही नहीं बचाता। वह हमें पाप से बचाता है। वह हमें नया जीवन देता है।

अब, इसका मतलब यह नहीं है कि हम उसके बाद पूरी तरह से कार्य करेंगे। यदि हमने ऐसा किया होता, तो पॉल को उन्हें यह समझाना नहीं पड़ता कि वे पाप के लिए क्यों मरे हैं और इसलिए उन्हें उसी के अनुसार जीना चाहिए। लेकिन इसका मतलब यह है कि हम पाप पर विजय पाने में सक्षम हैं।

ऐसा नहीं है कि हम हमेशा ऐसा करते हैं, लेकिन उस पाप का अब हम पर प्रभुत्व नहीं है। हम मसीह में नये लोग बन गये हैं। और जैसे-जैसे हम ईश्वर से अधिक सीखते हैं और जैसे-जैसे हम उस पर अधिक विश्वास करते हैं कि उसने हमारे जीवन में क्या किया है, अधिक से अधिक हम मसीह की छवि के अनुरूप बन सकते हैं।

या इसे अलग तरीके से कहें तो, कभी-कभी आपने देखा होगा कि लोगों को घोड़े से पहले गाड़ी मिल जाती है। रोमियों के मामले में, पॉल बिल्कुल स्पष्ट है। आप मोक्ष की ओर अपना काम नहीं करते।

आप मोक्ष अर्जित नहीं करते. अच्छे कार्य ईश्वर द्वारा हममें किए गए कार्यों का परिणाम हैं। वे हमें पाप से बचाने के लिए मसीह पर भरोसा करने का परिणाम होंगे।

साथ ही, ऐसा नहीं है कि इसके साथ कोई आज्ञाकारिता नहीं आती है। ऐसा नहीं है कि इसके साथ कोई धार्मिकता नहीं आती। ईश्वर वह है जो हमें धार्मिकता का उपहार देता है, लेकिन धार्मिकता उपहार का हिस्सा है।

यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो हम उपहार अर्जित करने के लिए करते हैं। यह उपहार का हिस्सा है. और इसलिए, यदि हमारे पास वास्तव में विश्वास है, तो यह उस तरीके से अलग तरीके से जीने में व्यक्त किया जाएगा जिस तरह से हम रहते थे जब हमें मसीह में विश्वास नहीं था।

उनका कहना है कि ये उनके नाम के लिए है. मुझे लगता है कि उनकी टिप्पणी वास्तव में इसे एक विषय या रोमनों के विषय के रूप में देखती है, कि सब कुछ भगवान की महिमा के लिए है। मुझे यह कहते हुए शर्म आ रही है कि जब तक मैंने उनकी टिप्पणी नहीं पढ़ी, तब तक मैंने इसे देखा भी नहीं था।

मैं यह नहीं कह सकता कि यह मुख्य विषय है। हो सकता है कि उन्होंने जो कहा, मैं उसे बढ़ा-चढ़ाकर बता रहा हूँ, लेकिन यह रोमियों में एक प्रमुख विषय है। परमेश्वर को अपने सम्मान, अपनी महिमा में रुचि है।

यह वास्तव में हमारी परवाह करने से अलग नहीं है क्योंकि यह हमारे लिए अच्छा है। मेरा मतलब है, हमें सबसे ज़्यादा किस चीज़ की ज़रूरत है? हमें ईश्वर के बारे में सत्य की आवश्यकता है। और इससे परमेश्वर का सम्मान होता है क्योंकि परमेश्वर परिपूर्ण है।

और इसलिए, उसके बारे में सच्चाई उसे सम्मान दिलाती है। और उसे सम्मान दिलाने से लोग भी उसके पास आते हैं। परन्तु उसके नाम के कारण विश्वास की आज्ञाकारिता अन्यजातियों में, या अन्यजातियों में भी हो सकती है।

तो संभवतः इस संदर्भ में, अन्यजातियों के बीच। इसलिए, पॉल यह सुनिश्चित करना चाहता था कि सुसमाचार उन अन्यजातियों तक पहुंचे जिनके बीच आप बुलाए गए हैं। इसलिए, वह बुलाए जाने के विचार पर वापस आ रहा है, लेकिन साथ ही, हम देखते हैं कि इस समय रोम में अधिकांश चर्च अन्यजातियों से बना है।

अब इसका मतलब यह नहीं है कि वहां कोई यहूदी नहीं है, जैसा कि कुछ लोगों का तर्क है कि वहां वस्तुतः कोई यहूदी नहीं है। लेकिन 54 में पुनः यहूदी ईसाई वापस आने में सफल हो गये। यदि आप रोमियों अध्याय 16 में लोगों के नामों को देखें, तो निश्चित रूप से, उनमें से कुछ घरेलू चर्चों के नेता हैं और शायद अनुपातहीन संख्या में नेता यहूदी थे क्योंकि वे टोरा को बेहतर जानते थे।

लेकिन हम देखते हैं कि रोम में यहूदी ईसाई थे, और रोम में यीशु में यहूदी विश्वासी थे। तो, यह सभी गैर-यहूदी नहीं थे, लेकिन ऐसा लगता है कि मंडली का अधिकांश हिस्सा गैर-यहूदी था। और जैसे-जैसे हम आगे बढ़ रहे हैं, इसे ध्यान में रखना ज़रूरी है।

ऐसा प्रतीत होता है कि वे कुछ यहूदी रीति-रिवाजों को जानते थे, लेकिन वे रोम में व्यापक रूप से जाने जाते थे, जिनमें रोम में यहूदी धर्म के आलोचक भी शामिल थे। आप इसे उनके लेखन में पाते हैं। रोमियों अध्याय एक और पद सात में, पॉल प्रिय होने की बात करता है।

वह ईश्वर से प्रेम किये जाने की बात करता है। खैर, यह कुछ ऐसा है जिस पर वह बार-बार वापस आएगा। अध्याय पाँच, पद पाँच, जहाँ पवित्र आत्मा द्वारा जो हमें दिया गया है, परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में डाला जाता है।

अध्याय पाँच और श्लोक आठ, जब मसीह हमारे लिए मरे तो परमेश्वर ने हमारे प्रति अपना प्रेम कैसे प्रदर्शित किया। 835, 37, 39, रोमियों अध्याय आठ के अंत में उस चरमोत्कर्ष पर, कोई भी चीज़ हमें ईश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकती। कुछ भी हमें मसीह के प्रेम से अलग नहीं कर सकता।

अध्याय नौ, श्लोक 13 और 25, जहां भगवान कहते हैं, याकूब, मैंने प्यार किया, एसाव से नफरत की। 11:28, वे पुरखाओं के कारण प्रिय हैं। साथ ही ईश्वर के प्रति प्रेम, अध्याय आठ और पद 28, जहां सभी चीजें मिलकर ईश्वर से प्रेम करने वालों की भलाई के लिए काम करती हैं।

दूसरों के लिए प्रेम, रोमियों 12:9, 13:8-10, जहां कानून का हृदय एक दूसरे से प्रेम करना है। अध्याय 14, श्लोक 15, जहां वह आपके विभिन्न रीति-रिवाजों के बावजूद एक-दूसरे से प्रेम करने की बात कर रहा है। रोमनों में प्रेम पर प्रमुखता से जोर दिया जाएगा और इसे शुरुआत में ही यहां पेश किया जा चुका है।

पॉल जानता है कि वह कहाँ जा रहा है। और वह उन्हें संत कहलाने की बात करता है। कम से कम इसका अक्सर इसी तरह अनुवाद किया जाता है।

पॉल एक तथाकथित प्रेरित है. उन्हें संत कहा जाता है. अब, संत होने का क्या मतलब है? निःसंदेह, कैथोलिक चर्च का इसके लिए एक विशेष उपयोग है।

इसका तात्पर्य ऐसे लोगों से है जो विशेष रूप से पवित्र थे इत्यादि। परंतु यह वह अर्थ नहीं है जिसमें इसका अभिप्राय है। यह यहां सभी विश्वासियों की बात कर रहा है।

और संत बिल्कुल वैसा ही है जैसा अक्सर इसका अनुवाद किया जाता है। संत क्या है, अनुवादित संत शब्द का अर्थ है, हगियोस एक ऐसा शब्द है जिसका अर्थ है पवित्र किया हुआ या अलग किया हुआ या पवित्र। तो, ये पवित्र हैं।

ये वे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर को समर्पित किया गया है। और यदि आप प्रथम कुरिन्थियों की तुलना करते हैं, तो आप देख सकते हैं कि कभी-कभी ऐसे लोग भी जो उस तरह से नहीं रह रहे हैं जो भगवान को समर्पित है, इसका मतलब यह नहीं है कि भगवान ने उन्हें खुद को समर्पित नहीं किया है। इसका सीधा सा मतलब है कि उन्हें वही होना चाहिए जो वे हैं।

उन्हें तदनुसार जीने की आवश्यकता है क्योंकि वह शुरुआत में कुरिन्थियों से बात करता है, और उन्हें मसीह यीशु में पवित्र किए गए संत कहता है। हमें भगवान के प्रति समर्पित कर दिया गया है। और भगवान के प्रति समर्पित होने का क्या मतलब है? इसका मतलब है कि हम उसके लिए अलग रखे गए हैं।

हम इस दुनिया के नहीं हैं. हम इस दुनिया के अनुरूप नहीं हैं, लेकिन आपके दिमाग के नवीनीकरण से बदल जाते हैं। यदि हम अपने आप को उन लोगों के रूप में सोचते हैं जिन्हें भगवान के लिए अलग कर दिया गया है, तो आप जानते हैं, यदि आपके पास मंदिर में कुछ था जो पवित्र उपयोग के लिए अलग रखा गया था, तो इसका उपयोग किसी और चीज़ के लिए नहीं किया जाना था।

हमें पूर्णतः ईश्वर के प्रति समर्पित होना चाहिए। हम जो कुछ भी हैं, और हमारे पास जो कुछ भी है वह ईश्वर की सेवा के लिए समर्पित होना चाहिए। संत या अलग किए गए पवित्र व्यक्ति होने का यही मतलब है।

अब, फिर से, पहले कोरिंथियंस हमें दिखाते हैं कि व्यवहार में, लोग हमेशा उस तरह से नहीं रहते हैं, लेकिन आदर्श रूप से हम ऐसे ही हैं। और अन्य पाठ, दूसरा कुरिन्थियों 6 और सात का पहला पद, पहला पीटर, और इसी तरह। परमेश्वर कहता है, पवित्र बनो, जैसा मैं पवित्र हूँ।

ख़ैर, परमेश्वर के पवित्र होने के समान पवित्र होने का मतलब है कि हम परमेश्वर के उद्देश्य के लिए पूरी तरह से अलग हो गए हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि हम मजाक नहीं कर सकते, एक-दूसरे के प्रति मित्रवत नहीं रह सकते और अपने भोजन और इस तरह की चीजों का आनंद नहीं ले सकते। बाइबल कहती है कि भोजन भी पवित्र किया गया है।

लेकिन मुद्दा यह है कि अंततः हमारे जीवन का उद्देश्य सिर्फ यह नहीं है कि हम अब स्वायत्त नहीं हैं। हम सिर्फ यह नहीं सोच रहे हैं, ठीक है, इस छोटे से जीवन में मेरे लिए क्या अच्छा होगा, बल्कि उस ईश्वर की महिमा के लिए अनंत काल तक क्या गिना जाएगा जिसका मैं सदस्य हूं? यह हमें एक शाश्वत उद्देश्य देता है।

खैर, वह उन्हें नमस्कार करता है, ईश्वर, पिता और प्रभु यीशु की ओर से अनुग्रह और शांति। खैर, आपको अक्षरों के विभिन्न भागों के बारे में याद है। यह लेखक की ओर से है.

फिर यह दर्शकों का नाम बताता है और फिर शुभकामनाएं देता है। जैसा कि हमने पहले कहा था, चिरीन को चारिस में बदल दिया गया था, और पॉल ने शांति जोड़ दी, जो एक विशिष्ट यहूदी अभिवादन था। और यह आशीर्वाद के रूप में कार्य करता है।

आपको कृपा और शांति मिले। लेकिन ऐसा आशीर्वाद हमेशा किसी देवता का आह्वान करता था या जब यह शांति होती थी, आम तौर पर एक यहूदी अभिवादन होता था, तो यह देवता, ईश्वर का आह्वान करता था। और पॉल यहां ऐसा करने जा रहा है।

परमेश्वर, पिता और प्रभु यीशु मसीह की ओर से आपको अनुग्रह और शांति मिले। वैसे, पुराने नियम के ग्रीक अनुवाद में भगवान और भगवान दोनों दिव्य उपाधियाँ हैं। भगवान हमेशा नहीं होते, लेकिन अक्सर होते हैं।

और हम 1 कुरिन्थियों 8, श्लोक 5 और 6 से देख सकते हैं कि पॉल के लिए, यह विशेष रूप से उसी तरह से कार्य करता है। एक ईश्वर, शेमा का एक भगवान ईश्वर, पिता और यीशु बन जाता है। शेमा होने के नाते, उसने हमेशा भगवान को लिखा, हमारा भगवान, भगवान एक है।

इसलिए, पॉल यहीं अपने कई पत्रों की शुरुआत में यीशु को दिव्य के रूप में बुला रहा है। और कई अन्य लोगों ने भी 1 पतरस और प्रकाशितवाक्य 1 इत्यादि में यही काम किया। अब रोमियों 1, श्लोक 8 से 15 तक चलते हैं।

पॉल अनुग्रहित है. उन्हें प्रेरिताई का अनुग्रह प्राप्त हुआ है। वह सभी अन्यजातियों के लिए अनुग्रहकारी है, लेकिन उसी आह्वान ने उसे रोम जाने से रोक दिया है क्योंकि उसके मिशन ने उसे कहीं और व्यस्त रखा है।

आप जानते हैं, रोम में पहले से ही विश्वासी मौजूद हैं। इसलिए, वह वहां जाने की कोशिश कर रहा है जहां सुसमाचार का प्रचार नहीं किया गया है। वह अध्याय 15 में इसे और अधिक विस्तार से समझाता है।

संभवतः जब वह फिलिप्पी से थिस्सलुनीके तक वाया इग्नाटिया मार्ग का अनुसरण कर रहा था, तब क्लॉडियस के आदेश से उसे कुछ हद तक हिरासत में लिया गया था। खैर, वह इसका पीछा करते हुए बाल्कन के पश्चिमी तट तक, एड्रियाटिक के पार और रोम तक जा सकता था। संभवतः उसने ऐसा इसलिए भी नहीं किया क्योंकि उसके पीछे कुछ ऐसे उत्पीड़क थे जो उसके पीछे थे।

इसलिए, वह दक्षिण में बेरिया चला गया और फिर अंततः मैसेडोनिया छोड़कर अखाया चला गया। लेकिन मुख्य कारण यह है कि वह अभी तक रोम नहीं आए हैं, विशेष रूप से आध्यात्मिक रूप से जरूरतमंद गंतव्यों के कारण, जो हमें दुनिया के उन हिस्सों के बारे में कुछ सुझाव दे सकते हैं जिन्हें अभी तक सुसमाचार प्राप्त नहीं हुआ है। ऐसी जगहें हैं जहां हमें निश्चित रूप से लोगों को भेजने की जरूरत है, जहां फसल जमीन पर गिर रही है और मजदूरों के अभाव में सड़ रही है।

लेकिन ऐसे स्थान भी हैं जहां लोगों को सुसमाचार सुनने का अवसर नहीं मिलता है और हो सकता है कि उन्हें तब तक अवसर न मिले जब तक, ठीक है, कभी-कभी अन्य तरीके भी होते हैं, यदि आप जानते हैं, हवाई तरंगों के माध्यम से या जो भी हो, सुसमाचार पहुंचाने के लिए और हमें भरोसा है कि भगवान इसका उपयोग करेंगे। हम प्रार्थना कर रहे हैं, भगवान लोगों से दर्शन और स्वप्न आदि में बात करेंगे। लेकिन कुछ जगहें ऐसी भी हैं जहां उन लोगों के बिना नहीं पहुंचा जा सकता जो वहां जाने के इच्छुक हैं और कभी जीवित वापस नहीं आते हैं।

और पॉल इसी प्रकार का व्यक्ति था। और मसीह के प्रति समर्पित लोगों के रूप में, हममें से कुछ लोगों को इस प्रकार का व्यक्ति बनने की आवश्यकता होगी। हम सभी की बुलाहट एक जैसी नहीं है।

जॉन द बैपटिस्ट और जीसस की बुलाहट एक जैसी नहीं थी, मैथ्यू 11, ल्यूक 7। लेकिन ऐसी जगहें हैं जहां तक पहुंचने की जरूरत है, जहां कभी नहीं पहुंचा जा सका है। ऐसे अरबों लोग हैं जिन्होंने कभी भी सुसमाचार को उन तरीकों से नहीं सुना है जो उनके सांस्कृतिक संदर्भ में समझ में आते हैं। और निःसंदेह, एक बार जब हम वहां कुछ लोगों तक पहुंच जाते हैं और उनमें विश्वास बढ़ जाता है, तो वे अपनी संस्कृति तक हमारी पहुंच से बेहतर तरीके से पहुंच सकते हैं।

लेकिन बहुत सारे लोगों तक पहुंचने की जरूरत है. इसलिए, पॉल को रोमन साम्राज्य में फायदा हुआ क्योंकि वह ग्रीक बोलता था। और पूर्वी रोमन साम्राज्य में, इससे उसे बहुत सारे लाभ मिले क्योंकि वह जहां भी गया, अधिकांश स्थानों पर यह एक प्रकार की सामान्य भाषा थी।

पॉल थैंक्सगिविंग भी प्रदान करता है। ये बातें उनके अनेक पत्रों में हमारे पास हैं। यह सभी प्राचीन पत्रों में नहीं है, लेकिन यह कई प्राचीन पत्रों में दिखाई देता है।

और पॉल ने उन्हें अपने अधिकांश पत्रों में रखा है। यह एक तरह से उल्लेखनीय है जहां वह नहीं करता है, उदाहरण के लिए, गलाटियन्स में, जहां वह गलाटियन ईसाइयों के व्यवहार से परेशान और थोड़ा परेशान लगता है, इस हद तक कि वह, अध्याय एक में कुछ बार, कॉल करता है उन लोगों पर श्राप डालो जो उन्हें भटका रहे हैं। लेकिन किसी भी मामले में, आम तौर पर, उनके पत्रों में धन्यवाद होता है।

अध्याय एक के श्लोक नौ में वह ईश्वर को अपना साक्षी कहता है। वैसे, किसी देवता को साक्षी के रूप में बुलाना आम बात थी। यह मूलतः एक शपथ थी.

यदि आपने किसी देवता को गवाही देने के लिए बुलाया, तो आप कह रहे थे कि यह देवता जो इन सभी चीजों को देखता है वह जानता है कि मैं सच कह रहा हूं या नहीं। इसलिए, मैं इस देवता को गवाही देने के लिए बुला रहा हूं कि मैं सच बोल रहा हूं, इस निहितार्थ के साथ कि अगर मैं सच नहीं बोल रहा हूं, तो मैं इस देवता के नाम का अपमान कर रहा हूं। और यह देवता मुझे सज़ा देगा, शायद मार डालेगा, ऐसा ही कुछ।

इसलिए, अधिकांश लोग झूठी शपथ लेने से डरते थे, लेकिन कुछ लोग वास्तव में इतने अधार्मिक थे कि ऐसा कर सके। दरअसल, रैटोरिका विज्ञापन अलेक्जेंड्रम , जो कि पूर्व-ईसाई काल की एक प्राचीन अलंकारिक पुस्तिका है, विभिन्न तरीकों की व्याख्या देती है कि आप शपथ के तहत झूठ बोल सकते हैं। लेकिन वैसे भी, किसी देवता को साक्षी के रूप में बुलाना एक आम बात थी।

पॉल ऐसा करता है. और आप सोचते हैं, ठीक है, लेकिन क्या यीशु ने ऐसा नहीं करने के लिए नहीं कहा था? याकूब 5:12 में भी आपके पास यही बात है। यीशु कह रहे थे, इसकी या इसकी कसम मत खाओ, या यह सोच कर कि तुम परमेश्वर के नाम की कसम खाने से दूर हो रहे हो। तुम्हारा हाँ हाँ हो, तुम्हारा ना ना हो।

दूसरे शब्दों में कहें तो आपमें इतनी ईमानदारी होनी चाहिए कि आपको शपथ की भी जरूरत न पड़े। लेकिन वह वस्तुतः यह नहीं कह रहे होंगे कि आप कभी भी शपथ नहीं ले सकते। हो सकता है कि यह इसे अतिशयोक्तिपूर्ण तरीके से व्यक्त कर रहा हो।

बेशक, हर चीज़ की तरह इस पर भी बहस होती है। लेकिन यह मेरा स्पष्टीकरण है कि पॉल अक्सर ऐसा क्यों करेगा, भले ही मुझे नहीं लगता कि इसमें कोई सवाल है कि यीशु ने वास्तव में ऐसा सिखाया था। यह जेम्स वगैरह में भी प्रमाणित है।

लेकिन, ऐसा प्रतीत होता है कि पॉल 2 कुरिन्थियों अध्याय एक में भी वही शब्द उद्धृत कर रहा है। वह उनके साथ रहने की लालसा, उत्कंठा की बात करता है। और दोस्ती के स्नेह भरे पत्रों में यह एक परिचित अभिव्यक्ति थी।

वास्तव में, कभी-कभी आपके पास इन पत्रों के लेखक होते हैं और हम श्लोक 11 में इस तरह के विचार पर अधिक आएंगे। लेकिन कभी-कभी आपके पास मित्रवत पत्रों के लेखक अपने दोस्तों से कहते हैं, आप जानते हैं, मैं वास्तव में आहत हूं क्योंकि आपने ऐसा किया है।' मुझे बार-बार मत लिखो, नहीं तो मुझे दुख होगा क्योंकि जब तुम उस क्षेत्र में थे तो तुमने मुझसे मुलाकात नहीं की या मुझसे मिलने आने का कोई इरादा नहीं बनाया। और आम तौर पर, 2 कुरिन्थियों अध्याय एक के मामले में नहीं, जिसे बहुत अधिक मजबूती से कहा गया है, लेकिन आम तौर पर यह कहने का एक स्नेहपूर्ण तरीका था, आप जानते हैं, मैं आपकी बात सुनने से चूक गया।

काश मैं आपकी बात सुन पाता। व्यक्ति पर अपराध बोध थोपने के लिए नहीं, न लिखने के लिए उन्हें दोषी महसूस कराने के लिए, बल्कि सिर्फ यह कहने के लिए कि, आप जानते हैं, मुझे आपसे सुनना अच्छा लगता है। ऐसा करना सांस्कृतिक रूप से समझी जाने वाली परंपरा थी।

और पॉल ऐसा है, आप जानते हैं, मैं आपके साथ रहने के लिए उत्सुक था। मैं आपके साथ रहना चाहता था। यह तो बस मेरी पुकार है जो अभी मेरे पास कहीं और रखी हुई है।

और वह प्रार्थना करता है, श्लोक 10 और 11, वह प्रार्थना करता है कि वह उनसे मिल सके क्योंकि वह वास्तव में उन्हें कुछ अनुग्रह प्रदान करना चाहता है। तुम जानते हो, परमेश्वर ने उसे प्रेरितत्व का अनुग्रह दिया है। वह उन्हें कुछ अनुग्रह या उन्हें अनुग्रह का उपहार, ईश्वर की इच्छा में उनके लिए एक करिश्मा प्रदान करना चाहता है।

वह एक सामान्य चेतावनी थी. 1 कुरिन्थियों 4.19 और 16.7. आपके पास यह अधिनियम अध्याय 18 में भी है। ठीक है, अगर ईश्वर ने चाहा।

यूनानी और यहूदी समान रूप से अक्सर ऐसा कहते थे। बेशक, जेम्स हमें बताता है कि हमें ऐसा कहना चाहिए क्योंकि हम नहीं जानते कि भविष्य में क्या होगा। जब वह ईश्वर की इच्छा से कहता है, तो यह आंशिक रूप से इसलिए भी हो सकता है क्योंकि वह जानता है कि यरूशलेम में खतरे उसका इंतजार कर रहे हैं।

वह निश्चित नहीं है कि संग्रह कैसे प्राप्त होगा। और, वह यह भी पहचानता है कि यहूदिया में ऐसे कई लोग हैं जो सुसमाचार का पालन नहीं कर रहे हैं जो उसे परेशानी दे सकते हैं। रोमियों 15.31 और 32.

पद 11 और 12 में वह यह भी कहता है कि पॉल उन्हें एक उपहार देना चाहता है। वह उन्हें कुछ आध्यात्मिक उपहार देना चाहता है। वह संस्थापक नहीं है, इसलिए वह भाई-बहनों के बारे में बिना सोचे-समझे लिख रहा है।

वह ऐसी धारणाएँ नहीं बना रहा है, जैसे कि आप जानते हैं, मैं तुम्हारा पिता हूँ, जैसा कि वह कोरिंथ में चर्च से कहता है। वह कहते हैं, भाइयों और बहनों, आप जानते हैं, मैं आपके साथ कुछ साझा करना चाहता हूं, कुछ जो मेरे पास है। मैं इसे आपको देना चाहता हूं ताकि हम परस्पर प्रोत्साहित हो सकें।

श्लोक 12. तो, वह लिख रहा है, वह एक प्रेरित है, लेकिन वह अपने साथी बुलाए गए लोगों, अपने साथी अलग किए गए लोगों को लिख रहा है, और उसका मानना है कि उन्हें पारस्परिक रूप से प्रोत्साहित किया जाएगा। वे उसे आशीर्वाद देंगे.

वह उन्हें आशीर्वाद देगा. जैसा कि वह उम्मीद कर रहा है, स्पेन जाने के रास्ते में उसे कुछ प्रोत्साहन की आवश्यकता हो सकती है। लेकिन कुछ को विशेष रूप से प्रोत्साहन के लिए उपहार दिया जाता है।

वही शब्द पैराकेलियो 12.8 में एक आध्यात्मिक उपहार के रूप में प्रकट होता है और पॉल स्वयं इस पत्र में कहीं और ऐसा करता है। मैं आपसे विनती करता हूं. में आपको प्रोत्साहित करता हूं।

वही शब्द, रोमियों 12:1, रोमियों 15:30, रोमियों 16:17। लेकिन वह विशेष रूप से उनके विश्वास को प्रोत्साहित करना चाहता है, रोमियों 1:16 और 17। और, आप जानते हैं, इस पत्र में वह यही करने जा रहा है। मेरा मतलब है, यह इस पत्र का एक केंद्रीय भाग, एक केंद्रीय बिंदु होगा।

खैर, वह उन्हें प्रोत्साहित क्यों करना चाहता है? फिर, श्लोक 11 और 12। उसे अन्यजातियों के लिए एक मिशन मिला है, श्लोक पांच और श्लोक 13 से 15। और इसलिए, उसने कहा, अन्यजातियों के लिए इस मिशन में वे भी शामिल हैं, और उसका एक दिव्य दायित्व है।

ऐसा न केवल वह चाहता है, बल्कि ऐसा करना उसका दायित्व भी है, श्लोक 14। वह इसके बारे में फिर से 1 कुरिन्थियों 9, श्लोक 16 और 17 में भी कहता है। ईश्वर के समक्ष मेरा दायित्व है, और यदि मैं यह नहीं करना चाहता, ठीक है, तो मुझे यह करना होगा।

तो, शायद मैं भी इसे करना चाहता हूँ और इसे करना चाहता हूँ। लेकिन उसका एक दैवीय दायित्व है, पद 14, और दैवीय दायित्व अन्यजातियों की पूरी श्रृंखला तक पहुंचना है, वह यहां पद 13 में कहता है। वह ऋण या दायित्व की भाषा का प्रयोग करता है।

वह अध्याय 13 में उस पर वापस आएगा, एक दूसरे से प्यार करने के अलावा किसी का कुछ भी ऋणी नहीं है। प्राचीन काल में ऋण की भाषा बहुत महत्वपूर्ण थी, विशेष रूप से यहूदी लोगों से ब्याज और ऋण नहीं वसूला जाता था, लेकिन सातवें वर्ष और जुबली के वर्ष के कारण वे हमेशा अपना ऋण वापस भी नहीं प्राप्त कर पाते थे। उन्हें सभी कर्ज़ माफ़ करने होंगे.

यह लोगों को कर्ज का गुलाम बनने और गरीबी के स्थायी चक्र में फंसने से बचाने का एक तरीका था। लेकिन इसका मतलब यह भी था कि कभी-कभी लोगों को उनका पैसा वापस नहीं मिलेगा और हर कोई इसे वहन नहीं कर सकता था। इसलिये जब छठा वर्ष या जुबली वर्ष निकट आता था, तब लोगों ने उधार देना बन्द कर दिया।

परिणामस्वरूप, यहूदी शिक्षकों ने इसके समाधान के लिए एक रास्ता निकाला जिसे संभव कहा गया, जहां आप मंदिर को पैसा उधार दे सकते थे, मंदिर लोगों को पैसा उधार देता था, लोगों को मंदिर को वापस भुगतान करना पड़ता था और लोगों को उनका पैसा मिलता था पीछे। यह यह सुनिश्चित करने का एक तरीका था कि गरीब लोग कम से कम अपनी फसल वगैरह बोने में सक्षम हों। कर्ज एक बड़ा मुद्दा बन गया.

और हम इसे रोमन दुनिया में देखते हैं जहां लोग ब्याज ले सकते थे। एक मामला सामने आया है. यह एक अत्यधिक, चरम उदाहरण है, लेकिन मैं चरम उदाहरण देना पसंद करता हूं क्योंकि वे अधिक यादगार हैं।

वे ग्राफिक रूप से बात को स्पष्ट करते हैं, लेकिन एक व्यक्ति ऐसा था जिसने पूरे शहर को 50% ब्याज पर पैसा उधार दिया था। तो, आप बता सकते हैं कि वह बहुत सारा पैसा वापस कर देगा जब तक कि वे अपने ऋण पर चूक न कर दें। लेकिन श्लोक 13 और 14, अन्यजातियों।

अन्यजातियों में यूनानी और बर्बर लोग शामिल थे। बारबेरियन गैर-यूनानियों के लिए एक शब्द था। इसलिए यहूदी लोगों को यूनानियों द्वारा भी बर्बर माना जाता था, हालाँकि उन्होंने रोमनों के लिए अपवाद बनाए थे, खासकर जब से उन पर उनके द्वारा विजय प्राप्त की गई थी।

वे उन्हें बर्बर नहीं मानते थे। यूनानी लोग जिन्हें बुद्धिमान मानते थे वे यूनानी और बर्बर थे जिन्हें वे आम तौर पर, या कम से कम परंपरागत रूप से, मूर्ख मानते थे। वे यूनानी भाषा नहीं बोलते थे।

यूनानियों को उनकी भाषा बार, बार, बार, बार जैसी लगती थी और इसीलिए वे उन्हें बर्बर कहते थे। यूनानी पूर्वी भूमध्य सागर की प्रमुख संस्कृति थी। यह कुछ हद तक ग्रीको-एशियाई संस्कृति बन गई थी।

यूनानियों द्वारा फ़ारसी साम्राज्य पर विजय प्राप्त करने के बाद, सांस्कृतिक आंदोलन दोनों दिशाओं में चला गया। लेकिन मैसेडोनियन खुद को ग्रीक मानते थे और पूर्वी भूमध्य सागर में, विशेषकर शहरों में प्रमुख संस्कृति, खुद को हेलेनिस्टिक या ग्रीक मानते थे। इसलिए पॉल सभी अन्यजातियों तक पहुंचना चाहता है।

वह यहूदियों तक पहुंचना चाहता है. सुसमाचार यहूदियों और अन्यजातियों के लिए है, लेकिन उसका अन्यजातियों के लिए एक विशेष मिशन है। और इन अन्यजातियों में यूनानी और गैर-यूनानी दोनों शामिल हैं।

रोमियों 1 के थीसिस कथन में, फिर से, सभी दस्तावेजों में यह नहीं था, लेकिन मैं उन लोगों से सहमत हूं जो सोचते हैं कि रोमियों में एक, एक प्रस्ताव , एक थीसिस है, या कुछ लोग कहेंगे कि इसे यूनानी लोग परिकल्पना, परिकल्पना, व्यवहार कहते हैं। एक विशेष स्थानीय स्थिति के साथ. लेकिन यह अधिक सामान्य हो सकता है. तो, यह वही हो सकता है जिसे यूनानी थीसिस कहते हैं।

थीसिस कथन आम थे. आपके पास यहाँ 1:16 और 1:17 में अनेक विषय हैं जो रोमियों में व्याप्त हैं। भगवान की धार्मिकता.

यह एक विषय है, विशेषकर अध्याय 10 तक, एक प्रमुख विषय। आस्था। खैर, यह रोमनों में एक प्रमुख विषय है, विशेषकर अध्याय 1, 3 और 4, 10 और 14 में।

यहूदी गैर-यहूदी मुद्दा, विशेष रूप से अध्याय 9 से 11 में, और फिर 15 में। और जैसा कि हमने देखा है, यह रोमनों की पूरी किताब में भी चलता है। कुछ लोग आम तौर पर सुझाव देते हैं कि यहां विषय सुसमाचार है क्योंकि वह धार्मिकता और विश्वास के बारे में यहूदी और अन्यजातियों दोनों के लिए अच्छी खबर की बात कर रहा है।

विषय पुराने नियम की भाषा को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए, भजन 98 श्लोक 2 और 3, यशायाह 51 श्लोक 4 से 5, और 52:10 इत्यादि। हमने रोमियों 1.2 में जो देखा, उसके अनुरूप, पॉल इस सुसमाचार को प्रकट कर रहा है जिसके लिए उसे भविष्यवक्ताओं के धर्मग्रंथों के माध्यम से अलग किया गया है।

इसलिए, वह यह समझाने के लिए पुराने नियम की भाषा और पुराने नियम के विषयों का उपयोग कर रहा है कि ईश्वर ऐसा ही है। और इसलिए, इसीलिए ये खुशखबरी इस तरह से आई है। रिचर्ड हेस ने पुराने नियम के साथ अंतर्पाठीयता पर बहुत कुछ किया है और यहां पुराने नियम के विषयों को देखते हुए कई अन्य विद्वानों ने भी ऐसा किया है।

हालाँकि मैं इसकी व्याख्या रिचर्ड से थोड़ा अलग तरीके से करने जा रहा हूँ, लेकिन अंतरपाठ्यता पर उनके काम के लिए बहुत सम्मान के साथ। सुसमाचार, पद 16, यह आस्था का विषय है। सुसमाचार का विषय परमेश्वर का पुत्र है।

हमने इसे पद 9 में पहले ही देख लिया है। आप पद 1 से 4 की तुलना कर सकते हैं, विशेष रूप से 1:3, जहां यह सुसमाचार की बात करता है, यीशु के बारे में अच्छी खबर जो दाऊद के वंश द्वारा और शरीर के अनुसार पैदा हुआ था। शक्ति के साथ पवित्रता की भावना. उनके पुनरुत्थान को ईश्वर का पुत्र घोषित किया गया। सुसमाचार का विषय, हम 15, 19, और 20 में भी देखते हैं, और 16, और 25 में भी, सुसमाचार का विषय यीशु मसीह, यीशु मसीहा है।

तो, सुसमाचार क्या है? इंजीलवाद क्या है? इंजील, इंजीलियन घोषित करने का क्या मतलब है? इसका मतलब है लोगों को यीशु के बारे में और विशेष रूप से उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान में यीशु के मंत्रालय के चरमोत्कर्ष के बारे में बताना। यही सुसमाचार का हृदय है। आप इसे राज्य के संपूर्ण सुसमाचार से आगे विस्तारित कर सकते हैं।

आप उन्हें सभी चार सुसमाचार पढ़ सकते हैं और आप उन्हें सुसमाचार दे रहे हैं, लेकिन कम से कम, यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान। यह संपूर्ण मुक्ति इतिहास में परमेश्वर के कार्य का चरमोत्कर्ष है। अब, श्लोक 16 में, वह यह भी कहता है, मुझे इस सुसमाचार से कोई शर्म नहीं है।

बेशर्मी वह हो सकती है जिसे हम लिटोट्स कहते हैं, जहां आप अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए जानबूझकर कम बयान देते हैं। इसलिए, वह सुसमाचार से शर्मिंदा नहीं है, जिसका अर्थ है कि उसे सुसमाचार पर गर्व है या वह इसके संदेश पर घमंड करता है। और हमारे पास वह अन्यत्र है जहां पॉल कहता है, आप जानते हैं, अगर मुझे घमंड करना है, तो मैं केवल मसीह के क्रूस पर घमंड करता हूं।

यह एक ऐसी संस्कृति थी जो सम्मान और शर्म पर जोर देती थी। वास्तव में, सभी संस्कृतियों में, हम कुछ हद तक ऐसा करते हैं, लेकिन यह एक ऐसी संस्कृति थी जो सम्मान और शर्म पर अत्यधिक जोर देती थी, विशेष रूप से पुरुष, शहरी, प्राचीन भूमध्यसागरीय संस्कृति। पॉल के संदेश में स्थिति-जागरूक संस्कृति में मूर्खता और कमजोरी शामिल थी, 1 कुरिन्थियों 1:18-23 में क्रूस के संदेश पर जोर दिया गया है।

अरे हाँ, मैंने अपना जीवन उस निष्पादित अपराधी का अनुसरण करने के लिए समर्पित कर दिया है जिसकी रोम ने निंदा की थी और उसे सूली पर लटका दिया था, जो सबसे निचले दर्जे के लोगों के लिए सबसे घृणित और अपमानजनक मौत थी। हाँ, मैं उनका अनुयायी हूँ। और मुझे कोई शर्म नहीं है.

संसार की शत्रुता आपको शर्मिंदा होने का प्रलोभन दे सकती है। 2 तीमुथियुस 1:8,- 12-16 इस के विषय में बोलो, जंजीरों से लज्जित हो, रोम के बन्दी होने से लज्जित हो। 1 पतरस 4:16, तुम जानते हो, तुम में से कोई कुकर्मी होकर दुख न उठाए, परन्तु यदि मसीही होकर दुख उठाए, तो लज्जित न हो।

यदि आप मसीह के लिए कष्ट सहते हैं तो शर्मिंदा न हों। लज्जित होने का प्रलोभन था। वास्तव में, कई बार मुझे एक युवा ईसाई के रूप में सुसमाचार साझा करने के लिए पीटा जाता था क्योंकि मैं उन स्थानों पर जहां सुसमाचार साझा कर रहा था, कभी-कभी सड़क पर, और बहुत से लोग मसीह के पास आते थे और कुछ लोगों को यह पसंद नहीं था संदेश।

तुम्हें पता है, मैं बस उन्हें यह पेशकश कर रहा था। मैं इसे किसी पर थोप नहीं रहा था, लेकिन उन्हें संदेश पसंद नहीं आया, हो सकता है कि उन्होंने इसके बारे में सुना हो। आमतौर पर, जो लोग मुझे पीटते थे वे आमतौर पर नशीली दवाओं का सेवन करते थे या नशे में थे।

लेकिन जो भी हो, उसके बाद कई बार मुझे शर्म महसूस हुई, लेकिन मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। बाइबल कहती है कि जब हम मसीह के नाम के लिए कष्ट सहते हैं तो हमें आनन्दित होना चाहिए। मेरा मतलब है, एक समय मुझे शायद अपना मुंह बंद रखना चाहिए था।

मैं वह नहीं कर रहा था जो मुझे करना चाहिए था। शायद दो बार. लेकिन फिर भी, क्योंकि एक बार मैंने पवित्र आत्मा से एक चेक भरा था।

आपको इस व्यक्ति की गवाही देने की आवश्यकता नहीं है। इस व्यक्ति से बात मत करो. मैंने बस सोचा कि मुझे मसीह को हर किसी के साथ साझा करना चाहिए।

उसने मुझे पीटा और मुझसे कहा कि अगर उसने मुझे दोबारा कभी देखा तो वह मुझे मार डालेगा। लेकिन वैसे भी, हमें मसीह की खुशखबरी से शर्मिंदा नहीं होना चाहिए। और पॉल बाद में कहता है कि अंतिम न्याय के समय परमेश्वर के सेवकों को युगांत में शर्मिंदा नहीं होना पड़ेगा।

रोमियों 5:5, उस आशा के बारे में बात करता है जो हमें मसीह में है जो पवित्र आत्मा हमें देता है। आशा हमें लज्जित नहीं करती, वहाँ के भजनों की भाषा को उद्घाटित करती है। अध्याय 9.33 और 10.11, वह यशायाह 28.16 की भाषा को उद्घाटित करता है, जहां फिर से, अगर हम मसीह में विश्वास रखते हैं तो हमें शर्मिंदा नहीं होना पड़ेगा।

उनका कहना है कि उन्हें शर्म नहीं आने का कारण यह है कि यह अच्छी खबर मुक्ति के लिए भगवान की शक्ति है। यह वही है जो मोक्ष को सक्षम बनाता है। वह अन्यत्र सत्ता की भाषा का उपयोग करता है--
सृजन करने की शक्ति, अध्याय 1:20; शक्ति, जिस प्रकार परमेश्वर इतिहास में कार्य करता है, अध्याय 9:17-22; अध्याय 15:19 में चमत्कारों से शक्ति; और विशेष रूप से अध्याय 1:4 में, मृतकों को जीवित करने की शक्ति। वह इफिसियों 1:19-20 में इसके बारे में विस्तार से बताता है। फिर, मुझे विश्वास है कि पॉल ने इफिसियों को लिखा। लेकिन इस सब के कारण, यह एक

नया जीवन प्रदान करके परिवर्तन करने की शक्ति भी है, जो रोमियों 15.13 में निहित है, पवित्र आत्मा की शक्ति द्वारा परिवर्तन।

1 कुरिन्थियों 1:18, क्रूस मुक्ति के लिए परमेश्वर की शक्ति है। लोगों को मुक्ति के प्रति आश्वस्त करने की आत्मा की शक्ति भी पवित्र आत्मा से ही आती है। 1 कुरिन्थियों 2.4-5. 1 थिस्सलुनिकियों 1.5. तो मोक्ष लाने की शक्ति ईश्वर की है।

यह मृतकों को जीवित करने की शक्ति है, किसी दिन हमारे नश्वर शरीरों को जीवित करने की शक्ति है। यह सुसमाचार के माध्यम से हमें बदलने और वर्तमान के साथ-साथ भविष्य में भी हमें बचाने की शक्ति है। खैर, वह कहते हैं कि यह बात पहले यहूदी के लिए है और यूनानी के लिए भी।

वह पहले ही श्लोक 5 और श्लोक 13 से 15 में कह चुका है कि उसका संदेश सभी लोगों के लिए है। और अब वह उस बात को दोहरा रहा है, जो रोमनों में कई बार दिखाई देने वाली है। वह कहते हैं, यह सभी लोगों के लिए है, लेकिन यह इज़राइल से किए गए वादों में निहित था, अध्याय 1.2। और यहूदी और अन्यजातियों के बीच का यह तनाव काफी हद तक हल हो गया है जैसा कि पॉल ने रोमियों 9-11 में विस्तार से बताया है।

यह यीशु के मॉडल का अनुसरण करता है, उदाहरण के लिए, मार्क 7.27 में, जहां यीशु सिरो-फीनिशिया के यूनानी शासक नागरिक वर्ग की सिरोफोनीशियन महिला से कहते हैं , वह कहते हैं, मैं सबसे पहले इसराइल के बच्चों के लिए आया हूं। पहले उन्हें खाना खिला दिया जाए. लेकिन फिर वह उसके विश्वास के कारण अनुरोध स्वीकार कर लेता है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में पॉल के साथ भी, अध्याय 13, पद 5, आराधनालय में शुरू होता है। अध्याय 28, श्लोक 17 में, वह रोम पहुँचता है। वह क्या करता है? वह रोम के यहूदी नेताओं को उनसे बात करने के लिए बुलाता है।

इसलिए, वह रोम में यहूदी नेताओं तक भी पहुंचना चाहता है। अधिनियम 28 इस पत्र के बाद है, लेकिन वह यहूदी लोगों तक पहुंचना चाहता है। वह यहूदी लोगों से शुरुआत करने जा रहा है, पहले यहूदी और फिर यूनानी, लेकिन वह अन्यजातियों के पास भी जाना चाहता है।

यही उनका मुख्य आह्वान है। और कुछ लोगों ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में ल्यूक के चित्रण पर सवाल उठाया है, जैसे प्रेरितों के काम 13.5 में पॉल पहले आराधनालयों में जाता है और उसके बाद अन्यजातियों के पास जाता है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि वे इस पर सवाल उठाएंगे क्योंकि 2 कुरिन्थियों 11 में, पॉल आराधनालयों में पांच बार पीटे जाने, 39 कोड़ों से पीटे जाने की बात करता है।

वह आराधनालय में पिटाई थी। व्यवस्थाविवरण कहता है कि आपको 40 से अधिक नहीं जाना है। तो, यह कानून के चारों ओर एक बाड़ थी।

उन्होंने इसे अधिकतम 39 कर दिया। और इसलिए, उसे आराधनालयों में कई बार यह प्राप्त हुआ था। यदि वह आराधनालयों में नहीं जा रहा होता, तो उसे आराधनालयों में नहीं पीटा जाता।

वह हमेशा उनके साथ अपने संबंध को अस्वीकार कर सकता था। आख़िरकार, वह एक रोमन नागरिक था। उसे इसके प्रति समर्पित नहीं होना पड़ा, लेकिन फिर आराधनालयों में उसकी आवाज़ खो जाएगी।

इसलिए कई बार उसे आराधनालयों में पीटा गया, वास्तव में पॉल वास्तव में पहले यहूदी के पास जा रहा था और फिर यूनानी के पास भी। रणनीति के संदर्भ में, यह भी समझ में आता है और साथ ही मुक्ति के इतिहास के संदर्भ में भी, क्योंकि यहां वे लोग थे जो पहले से ही धर्मग्रंथों को जानते थे, यहूदी और ईश्वर-भयभीत दोनों जो नियमित रूप से आते थे। वे शास्त्रों को पहले से ही जानते थे।

उनके पास मसीहा के लिए पहले से ही एक श्रेणी थी, या कम से कम उनमें से कई के पास थी। तो यहीं से पॉल शुरू होता है, लेकिन उसका मिशन हर किसी के लिए है। वह यहाँ पहले यहूदी और बाद में यूनानी क्यों कहता है? वह अन्यजातियों के बजाय यूनानी क्यों कहता है? हो सकता है कि उसने अब बर्बर लोगों को छोड़कर यूनानियों की सेवा करने का फैसला कर लिया हो, आपको लगता है? यहां कुछ संभावित स्पष्टीकरण दिए गए हैं।

सबसे पहले, अन्यजातियों, उन्होंने पद 14 में पहले ही उनका उल्लेख यूनानी और बर्बर के रूप में किया है, लेकिन रोम में अधिकांश ईसाई अन्यजाति थे और रोम में उनमें से अधिकांश ईसाई ग्रीक भाषी थे। वे अप्रवासी थे और रोम में अधिकांश यहूदी समुदाय के लोग थे, हालाँकि उनमें से कुछ लैटिन भाषी थे, उनमें से अधिकांश ग्रीक भाषी भी थे। रोमन अक्सर स्वयं को यूनानी मानते थे न कि बर्बर।

रोम में यहूदी लोग अधिकतर यूनानी भाषी थे। वहां के शुरुआती ईसाई ज्यादातर ग्रीक भाषी थे। वहां के शिलालेखों से पता चलता है कि, प्रलय आदि।

नेतृत्व सूचियाँ इसे दूसरी शताब्दी तक दर्शाती हैं। रोम के चर्च से लेकर कोरिंथ के चर्च तक पहली शताब्दी के अंत में लिखा गया पहला क्लेमेंट ग्रीक में लिखा गया है, जो आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि कोरिंथ में चर्च अभी भी बड़े पैमाने पर ग्रीक भाषी हो सकता है, लेकिन रोम में चर्च ऐसा प्रतीत होता है कि वे अधिकतर यूनानी भाषी भी हैं। लेकिन एक अन्य कारक यह है कि जब वह यहूदी और यूनानी के बारे में बात करते हैं, तो उनका मतलब अक्सर सामान्य तौर पर केवल यहूदी और गैर-यहूदी होता है।

रोमियों 2:9 और 10, और 3:9, 10, 12 में आपके पास यहूदी और यूनानी हैं। पॉल के लेखों में और यहां तक कि कभी-कभी अधिनियमों में भी आपके पास यह कई बार है। कुछ अन्य मामलों में, आपके पास यहूदी और अन्यजाति हैं, रोमियों 3:29, 9:24, 1 कुरिन्थियों 1:23, लेकिन अक्सर वह यहूदियों और यूनानियों का उपयोग करता है।

ग्रीक एक रूपक के रूप में या ग्रीक कुछ ऐसी चीज़ के रूप में जो समग्र रूप से अन्यजातियों के लिए है। जोसेफस अक्सर सभी गैर-यहूदी शहरी निवासियों के लिए ग्रीक शब्द का उपयोग करता है। अब, मुझे लगता है कि कुछ अनुवादों में केवल गैर-यहूदियों का अनुवाद किया गया है, जिससे मेरा स्पष्टीकरण अनावश्यक हो गया है, लेकिन यदि आपके पास कोई अनुवाद है जो मूल भाषा के करीब है, तो यहां ग्रीक का अर्थ संभवतः सामान्य रूप से अन्यजातियों के लिए है।

और हम जानते हैं कि पॉल सभी अन्यजातियों की परवाह करता है क्योंकि वह पहले ही यूनानियों और गैर-यूनानियों के बारे में स्पष्ट रूप से कह चुका है। यूनानियों के साथ-साथ यहूदियों के लिए भी अच्छी खबर क्यों है? खैर, वह कहते हैं कि वह ग्रीक में फॉर, गार शब्द का उपयोग करते हैं। वह इसे आगे आने वाली चीज़ों से जोड़ रहा है।

इससे पता चलेगा कि यह अन्यजातियों के लिए भी अच्छी खबर है। यदि आप वास्तव में आरेख बनाते हैं, तो आप रोमन 1 की रूपरेखा बना सकते हैं, लेकिन यदि आप वास्तव में इसे चित्रित करने का प्रयास करते हैं, तो आपके पास यह लंबा वाक्य है और आपके पास ग्रीक में ये सभी संयोजक हैं। यह इस कारण से सत्य है, यह इस कारण से सत्य है, इत्यादि।

आप इसे एक प्रवाह चार्ट की तरह चित्रित कर सकते हैं, लेकिन यह यूनानियों के साथ-साथ यहूदियों के लिए भी अच्छी खबर है क्योंकि उनका कहना है कि भगवान की धार्मिकता का मार्ग विश्वास के माध्यम से है। तो इसलिए, यह अन्यजातियों के लिए सुलभ है। इसके अलावा, वह इसे अध्याय 1 के श्लोक 17 में विकसित करने जा रहा है।

खैर, इससे हमें बहुत मदद मिलेगी अगर हम समझ जाएं कि ये शब्द जिनके बारे में वह बोल रहे हैं उनका क्या मतलब है। धार्मिकता से उसका क्या तात्पर्य है, विशेषकर परमेश्वर की धार्मिकता से? आस्था से उसका क्या तात्पर्य है? डिकाइओसुने , धार्मिकता। सामान्य यूनानी उपयोग में, इस शब्द का अर्थ न्याय था।

सेप्टुआजेंट में, फिर से, उस प्रकार का पाठ जो पॉल के समय में पाठ का सबसे आम संस्करण था। सेप्टुआजेंट में, अक्सर धार्मिकता ईश्वर की विश्वासयोग्यता या उसके अनुबंधित प्रेम से संबंधित होती है। हम इसे भजन संहिता 36, भजन 40, भजन 88, भजन 98, भजन 103, भजन 111, 119, 141, 143, 145 में सर्वत्र देखते हैं।

और मैं आपको सेप्टुआजेंट में ग्रीक गणना के बजाय अंग्रेजी गणना दे रहा हूं। परमेश्वर की धार्मिकता उसे सेप्टुआजेंट में कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। भजन 31.1 और 35.24 में, यह उसे उचित कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

खैर, इससे ग्रीक शब्द डिकाइओसुने का अर्थ निकलता है , कि इसका उपयोग इस तरह किया जाएगा। लेकिन यह उसे अपने सेवक के पक्ष में दयापूर्वक कार्य करने के लिए भी प्रेरित करता है। भजन 5.8, भजन 71.2 और 15 और 16 और 19 और 24, भजन 88.12। और जब भजन 51.14 में क्षमा किया जाता है, तो भजनकार परमेश्वर की धार्मिकता की प्रशंसा करेगा।

इसलिए, परमेश्वर की धार्मिकता उसका न्याय है, लेकिन यह अपनी वाचा के प्रति परमेश्वर की विश्वसनीयता भी है ताकि वह अपने लोगों को अपने साथ सही रखे। हमारे पास रोमियों में चौंकाने वाली भाषा है, दुष्टों को न्यायसंगत ठहराने वाली ईश्वर की चौंकाने वाली भाषा। औचित्य सिद्ध करने का मतलब अवैध कल्पना नहीं है।

आप किसी को माफ़ कर सकते हैं, लेकिन किसी को सही ठहराने का मतलब है उन्हें बरी करना, उन्हें दोषी नहीं घोषित करना। और सेप्टुआजेंट डिकाइओसुने में , जिस क्रिया का प्रयोग औचित्य सिद्ध करने के लिए किया जाता है, वह कोई कानूनी कल्पना नहीं है। इसका मतलब यह नहीं है कि भगवान आपको सिर्फ निर्दोष घोषित करता है, लेकिन आप वास्तव में निर्दोष नहीं हैं।

बल्कि, यह यह पहचानना है कि कोई व्यक्ति धर्मी है। आप इसे उत्पत्ति 44:16, यशायाह 43:9 और 26, ईजेकील 44:24 जैसी फोरेंसिक सेटिंग्स में पाते हैं। आपकी अपेक्षा है, निर्गमन 23 :7, न्यायाधीशों को दोषियों को बरी नहीं करना चाहिए। उन्हें उन लोगों को उचित नहीं ठहराना चाहिए या उन्हें धर्मी घोषित नहीं करना चाहिए जो दोषी हैं।

उन्हें न्यायोचित ठहराना चाहिए, अर्थात् निर्दोष को धर्मी ठहराना चाहिए, व्यवस्थाविवरण 25:1। 1 राजा 8:32 और 2 इतिहास 6:23 में हम देखते हैं कि परमेश्वर दोषियों को दण्ड देता है और धर्मियों को धर्मी ठहराता है। हम देखते हैं कि ईश्वर न्यायसंगत है, इस मामले में न्यायपूर्ण निर्णय सुनाकर न्यायपूर्ण दिखाया गया है, भजन संहिता 51.4, जिसे रोमियों 3:4 में उद्धृत किया गया है। साथ ही, हम देखते हैं कि इसका तात्पर्य निर्णय देना, दया द्वारा किसी का पक्ष लेना है। इसका एक उदाहरण हमारे पास डैनियल में है। दानिय्येल 9:7 और 14 में इस्राएल के विरुद्ध निर्णय है, परन्तु दानिय्येल विनती करता है, अपनी धार्मिकता के अनुसार उन्हें क्षमा कर दो, दानिय्येल 9:16। मीका अध्याय 7 में, परमेश्वर दोषियों को दण्ड देगा और अंततः उन्हें न्यायोचित भी ठहराएगा, मीका 7:9। मुझे नहीं पता कि मैंने यही कहा था, लेकिन युगांतशास्त्रीय पुष्टि, भविष्य का औचित्य, भविष्य में बरी होना, भगवान के फैसले से ठीक पहले दिखाया जा रहा है।

यशायाह 45:25, 50:8, और 58:8 में इसका प्रयोग इसी प्रकार किया गया है। हालाँकि इनमें से कुछ इज़राइल से किए गए वादे हैं जिन्हें पिछले संदर्भ में दंडित किया जा रहा है, जिसमें धर्मी सेवक के माध्यम से भी शामिल है जो उनके पापों को सहन करेगा, यशायाह 53:11, जो रोमियों 4:25 में प्रकट होता प्रतीत होता है। नहेमायाह अध्याय 9 और श्लोक 8 में ईश्वर के धर्मी होने का मतलब है कि वह इब्राहीम से किए गए वादे का सम्मान करेगा, जिसे उसने वफादार पाया, यह इब्राहीम के ईश्वर पर विश्वास करने की ओर इशारा करता है और यह उसके लिए धर्मी माना जाता है। तो, मैं इसे बहुत लंबे समय तक कर रहा हूं, लेकिन यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि इसका क्या मतलब है क्योंकि यह पूरी किताब में धार्मिकता और औचित्य के बारे में हम जो देखते हैं उसके लिए टोन सेट करने जा रहा है। परमेश्वर की धार्मिकता उसके लोगों को उसके साथ सही रखती है।

यह मात्र मानवीय धार्मिकता पर निर्भरता के साथ असंगत है। यह आपके पास रोमियों 9:30 से 10:6 और फिलिप्पियों 3:9 में है। यह मानव प्रयास द्वारा प्राप्त किया गया लक्ष्य नहीं है, बल्कि यह एक संबंधपरक आधार है जिसे मसीह के प्रति विश्वासयोग्यता के नए जीवन को निर्देशित करना

चाहिए, फिलिप्पियों 3.9 से 11। अक्सर रोमनों की पुस्तक क्रिया सजातीय, दिकाइओ का उपयोग करती है , ताकि ईश्वर विश्वासियों को अपने साथ सही कर सके।

और इस प्रकार हो सकता है कि पॉल यहाँ सजातीय संज्ञा, डिकाइसुने का उपयोग कर रहा हो। परमेश्वर जो अपने लोगों को अपने साथ ठीक रखता है। वह न्यायी है, लेकिन हम अध्याय तीन में यह देखने जा रहे हैं कि वह कैसे न्यायी और उन लोगों के लिए न्यायी ठहराने वाला हो सकता है जो मसीह यीशु में हैं।

वह हमें अपने साथ सही बनाता है और इसलिए वह हमें सही कह सकता है। लेकिन यह सिर्फ फोरेंसिक नहीं है. यह शब्द के सामान्य अर्थ का केवल एक तत्व है।

फोरेंसिक अर्थ में हमारे बरी होने से निपटने के बाद, पत्र आचरण को संबोधित करता है। रोमियों अध्याय छह, अध्याय आठ में कुछ, रोमियों 12:1 से 15:7 तक। जब ईश्वर कुछ किए जाने की घोषणा करता है, तो कोई यह अपेक्षा करता है कि ऐसा घटित हो, न कि केवल एक कानूनी कल्पना प्रस्तुत करें। जब भगवान कहते हैं, प्रकाश होने दो, प्रकाश है।

उत्पत्ति 1 :3 और 2 कुरिन्थियों 4:6 में, पॉल इसे ईश्वर के हमारे अनुभव पर भी लागू करता है। धार्मिकता कोई कानूनी कल्पना नहीं है. धार्मिकता एक परिवर्तनकारी उपहार है.

यह मानवीय उपलब्धि के बजाय एक दैवीय उपहार है। पॉल उस पर स्पष्ट है. रोमियों 5:17 और 21.

लेकिन भगवान का उपहार हमें एक नए तरीके से जीने में भी सक्षम बनाता है। इसीलिए वह आज्ञाकारिता की बात करते हैं। 1.5, 2:8, 5:19, और 15:18 भी याद रखें। यही सही जीवन है.

रोमियों अध्याय छह, श्लोक 16 से 18, 8:2-4, 13:14। धार्मिक शब्दों में, हम इसे जिस तरह से कह सकते हैं वह यह है कि औचित्य पुनर्जनन से अविभाज्य है। जब हमें वास्तव में धर्मी घोषित किया जाता है, तो भगवान ने हमें धर्मी बना दिया है। हम यह सब तुरंत नहीं जी सकते।

कम से कम अपने मामले में, मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैंने इसे तुरंत नहीं जीया है। लेकिन हम जो कह सकते हैं वह यह है कि हम बदल गए हैं। हम उसी क्षण से रूपांतरित होने लगते हैं।

उनका कहना है कि यह आस्था से विश्वास की ओर है। संभवत: वहां उनका क्या मतलब है, यह बहस का विषय रहा है, लेकिन संभवत: शुरू से अंत तक उनका मतलब है, इसमें विश्वास शामिल है। कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि यह हबक्कूक 2.4 के बारे में बात कर रहा है, जिसे उद्धृत किया गया है, कि यह भगवान की विश्वसनीयता और हमारे विश्वास, प्रत्येक में से एक के बारे में बात कर रहा है।

लेकिन मुझे समझ नहीं आता कि अगर आपने पहले से ही ऐसा नहीं सोचा है तो आप इसका पता कैसे लगा पाएंगे। तो मुझे लगता है कि विश्वास से विश्वास तक बस एक ग्रीक मुहावरे का अनुसरण

करते हुए कहा जा रहा है, इसमें शुरू से अंत तक विश्वास शामिल है। रोमनों में आस्था का क्या अर्थ है, इस संदर्भ में यह बहुत बहस का विषय है।

क्या इसका मतलब ईश्वर की वफ़ादारी या हमारी आस्था या वफ़ादारी है? लेकिन रोमियों में क्रिया पिस्तुओ का उद्देश्य लगभग हमेशा ईश्वर या ईसा मसीह होता है। और इसी कारण से, मैं इस विवाद को लेता हूं, यह 3:22 में फिर से सामने आएगा, लेकिन मेरा विचार है कि वह जिस बात का जिक्र कर रहा है वह उसमें हमारा विश्वास है। लेकिन उस पर हमारे विश्वास का क्या मतलब है? उस पर हमारा विश्वास उसकी वफ़ादारी पर आधारित है।

जैसे-जैसे हमें उसकी वफ़ादारी का पता चलता है, हम उस पर और अधिक निर्भर हो जाते हैं। परिचयात्मक प्रारंभिक बचत विश्वास काफी परिचयात्मक है, जैसा कि हम देखेंगे जब हम इब्राहीम के उदाहरण के साथ रोमन अध्याय चार में पहुँचेंगे। जब वह इसहाक को अर्पित करता है, तो इससे ईश्वर के साथ संबंध के माध्यम से विश्वास विकसित होता है।

लेकिन उनका प्राथमिक विश्वास काफी प्राथमिक था। और यह हमारे लिए एक प्रोत्साहन होना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं है कि हमें सबकुछ अपने दिमाग में रखना होगा।

हमें निश्चित रूप से ट्रिनिटी के सभी विवरणों का पता लगाने की ज़रूरत नहीं है, अन्यथा शायद अधिकांश धर्मशास्त्री परेशानी में पड़ जाएंगे, है ना? क्योंकि यह कुछ ऐसा है जिसे जानने के लिए लोगों ने बहुत मेहनत और लंबे समय तक मेहनत की है। उस पर विश्वास करने का क्या मतलब है? इसका मतलब यह महसूस करना है कि वह भरोसेमंद है, और किसी भी चीज़ की तुलना में उस पर निर्भर रहना बेहतर है। इसका मतलब सभी संदेहों को दबा देना नहीं है।

इसका मतलब आस्था का भाव रखना नहीं है. इसका मतलब है कि हम मानते हैं कि वह इतना वफादार है कि हम अपना उद्धार उसे सौंप देते हैं। यह अंधेरे में कीर्केगार्डियन की छलांग नहीं है।

कीर्केगार्ड को अपने समय के एक निश्चित दर्शन से संबंधित होना पड़ा। यह अंधेरे में कीर्केगार्डियन की छलांग नहीं है। यह सुसमाचार में परमेश्वर के सत्य के प्रकाश में एक जानबूझकर उठाया गया कदम है।

और वह इसी बारे में बात कर रहा है। रोमियों 1, 18 से 23 और 28 में दुनिया की झूठी विचारधाराओं, भ्रष्ट दिमाग, दुनिया के भ्रष्ट मूल्यों के साथ विरोधाभास है, जो पॉल द्वारा घोषित सुसमाचार के विपरीत है। उस पर विश्वास करना सत्य पर भरोसा करना है।

आस्था का मतलब दिखावा करना नहीं है, जिसे हम अक्सर तब सोचते हैं जब हम आज अपनी संस्कृति, मेरी संस्कृति आज में अंग्रेजी शब्द का उपयोग करते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि आप बहुत ज्यादा इच्छा करें और फिर ऐसा हो जाएगा। कांत वास्तव में आस्था के लिए जगह बचाने की कोशिश कर रहे थे क्योंकि कुछ अन्य लोगों ने व्यक्तिपरक किसी भी चीज़ के लिए कोई जगह नहीं दी थी।

और उन्होंने कहा, ठीक है, आस्था व्यक्तिपरक है। यह व्यक्तिपरक क्षेत्र में है. हम इसे उद्देश्य से अलग करते हैं, जो ज्ञान है।

समस्या यह है कि लोग कहते रहे, ठीक है, केवल एक चीज जो मायने रखती है वह यह है कि उद्देश्य क्या है। तो, कीर्केगार्ड का कहना है कि जब विश्वास केवल व्यक्तिपरक है तो हम इस खाई को कैसे पार कर सकते हैं? खैर, आप अँधेरे में छलाँग लगाओ या ऐसा ही कुछ। लेकिन आस्था यही नहीं है.

आस्था ईश्वर के सत्य के प्रकाश में एक जानबूझकर उठाया गया कदम है। मुझे लगता है, अच्छा, मुझे कितने विश्वास की आवश्यकता है? यीशु ने कहा, तुम्हें बस राई के दाने के समान विश्वास की आवश्यकता है। सवाल यह नहीं है कि आपकी आस्था कितनी है, सवाल यह नहीं है कि आपकी आस्था कितनी बड़ी है, सवाल यह है कि जिस भगवान पर आपकी आस्था है वह कितना बड़ा है? विश्वास इसी बारे में है.

कभी-कभी पश्चिमी दुनिया में, हमने विद्वान हलकों में हमारे संदेह के कारण इसे और अधिक जटिल बना दिया है। हमने इसे जटिल बना दिया है, ठीक है, आपको इस विश्वास पर काम करना होगा। आपको सभी सवालों का जवाब देना होगा.

लेकिन जब हम ऐसा करते हैं, तो हम इसे वफादार ईश्वर में विश्वास के बजाय अपने विश्वास में विश्वास बना लेते हैं। जैसा कि लिखा गया है, वह कहते हैं, वह धर्मग्रंथ को उद्धृत करने जा रहा है, और वह इस परिचित सूत्र का उपयोग करता है जिसका उपयोग धर्मग्रंथ के यहूदी और ईसाई उद्धरणों में किया गया था, जैसा कि लिखा गया है। वास्तव में , यह बात पुराने नियम से भी मिलती है, कभी-कभी पुराने नियम के पहले के दस्तावेज़ों को उद्धृत किया जाता है।

तो, वह धर्मी की बात करता है. भला, धर्मी कौन है? वह हबक्कूक अध्याय दो और श्लोक चार से उद्धृत कर रहा है। हबक्कूक 2:4 में संदर्भ न्याय के समय धर्मी व्यक्ति की रक्षा करना है जब न्याय भूमि पर आता है।

कुछ लोगों ने यहाँ के धर्मी व्यक्ति को यीशु के रूप में लिया है। निस्संदेह, यीशु धर्मी था। वहां कोई तर्क नहीं.

अधिनियम 3.14 और 7.52 उसे धर्मी कहते हैं। लेकिन यह पॉलीन साहित्य में डिकाइओस , धर्मी, के अन्य 16 उपयोगों में से किसी में भी फिट नहीं बैठता है , जिसमें गैलाटियंस 3.11 में उसी मार्ग का उद्धरण भी शामिल है। तो संभवतः यहाँ यीशु के धर्मी होने की बात नहीं की जा रही है। यह संभवतः उसके बारे में बात कर रहा है जो परमेश्वर के समक्ष धर्मी है, जो कोई भी परमेश्वर के समक्ष धर्मी है।

वफ़ादारी या विश्वास द्वारा उचित ठहराया गया। विश्वास का तात्पर्य वफ़ादारी से है और यह वफ़ादारी पर निर्भर करता है। सेप्टुआजेंट में, हबक्कूक 2.4 का ग्रीक संस्करण, यह मेरे, ईश्वर बोलने, मेरे विश्वास, मेरे पिस्टिस की बात करता है ।

हिब्रू में, यह ईश्वर के विश्वास की बात नहीं कर रहा है। यह धर्मी व्यक्ति के विश्वास की बात कर रहा है। और पॉल बाद में ईश्वर के विश्वास या विश्वासयोग्यता के बारे में बात करता है, रोमियों 3:3 में उसका पिस्टिस , जिसका अर्थ उसकी विश्वासयोग्यता है, लेकिन वह वहां अपने श्रोताओं को ज्ञात ग्रीक संस्करण का पालन नहीं करता है।

और इस परिच्छेद में, वह सर्वनाम को छोड़ देता है, शायद इसलिए क्योंकि वह जानता है कि हिब्रू और यूनानी सहमत नहीं हैं। वह संभवतः जानता है कि यूनानी ईश्वर के विश्वास, ईश्वर की विश्वासयोग्यता की बात करता है, लेकिन हिब्रू धर्मी व्यक्ति के विश्वास की बात करता है। इसलिए, पॉल सर्वनाम को छोड़ देता है।

रोमनों में, आम तौर पर, भले ही वह रोमियों 3:3 में भगवान की वफादारी की बात करता है, आम तौर पर वह आस्तिक की पिस्टिस , अध्याय 1, कविता 8, कविता 12, इत्यादि के बारे में बात करता है। यहाँ तक कि रोमियों अध्याय 4 और पद 5 में भी वही पाठ प्रतिध्वनित हो रहा है। अब, पॉल ने पहले गलातियों को एक पत्र लिखा था। और गलातियों 3.6 और 11 में, वह दो बाइबिल ग्रंथों को अचानक जोड़ता है जिनमें धार्मिकता और विश्वास दोनों का उल्लेख है।

दूसरा पाठ स्पष्ट रूप से एक आस्तिक के विश्वास, अब्राहम के विश्वास, उत्पत्ति 15:6 को संदर्भित करता है। तो, यह संभव है कि पॉल इसी तरह इसकी व्याख्या कर रहा है। मेरा मतलब है, आराधनालयों में उनके पास पर्याप्त बहसें थीं कि यदि वह ग्रीक संस्करण उद्धृत कर रहे होते, और भले ही उनके मन में हिब्रू संस्करण नहीं होता, तब तक किसी ने इसे उनके ध्यान में ला दिया होता। तो, वह संभवतः यहाँ आस्तिक के विश्वास का उल्लेख कर रहा है।

और फिर वह विश्वास से जीने की बात करता है। कुछ अन्य फ़रीसी व्याख्याकारों की तरह, वह संभवतः शाश्वत जीवन पर लाइव लागू होता है। मेरा मतलब है, सिद्धांत फैसले से बच रहा था, लेकिन सिद्धांत उससे आगे तक फैला हुआ है।

यह वही सिद्धांत है कि ईश्वर अनन्त जीवन के लिए कैसे कार्य करता है। और अनन्त जीवन, जब यहूदी लोग इसके बारे में बात करते थे, तो इससे उनका मतलब आम तौर पर आने वाले युग का पुनरुत्थान जीवन होता था, इस प्रकार पॉल रोमियों 2:7, 5:21, 6:22 और 23, 8:13 में भाषा का उपयोग करता है। , 10:5 और 14:9. इसलिए, मुझे लगता है कि मेरे पास यह सोचने का कारण है कि यहां भी इसका यही मतलब है। यद्यपि यह आने वाले युग का पुनरुत्थान जीवन है, विश्वासियों ने पहले ही इसमें प्रवेश कर लिया है, 6:10 से 13, 8:2, और 8:6। तो, इसका मतलब यह है, जैसा कि हबक्कूक में इसका मतलब था, भगवान उन लोगों को अपने क्रोध से बचाता है जो उस पर भरोसा करते हैं।

लेकिन यहां पॉल के आवेदन के लिए, यह न केवल किसी विशेष समय पर किसी विशेष फैसले में क्रोध पर लागू होता है, बल्कि अंततः पूरी तरह से भगवान के क्रोध पर लागू होता है। हम परमेश्वर के क्रोध से बच गए हैं। हम परमेश्वर के क्रोध से बच गए हैं और इसलिए हमारे पास अनन्त जीवन है, आने वाले युग का जीवन, वह जीवन जो दानिय्येल 12:2 को संदर्भित करता है, जिससे यहूदी लोगों ने आने वाले युग का जीवन पाने का यह विचार विकसित किया जब हमारे शरीर पुनर्जीवित

इस क्रोध से उनका क्या अभिप्राय है? यह क्रोध कैसे व्यक्त किया जाता है? हम यह देखने जा रहे हैं कि यह क्रोध लोगों को उनकी अपनी मूर्खता के हवाले करके व्यक्त किया जाता है, एक अर्थ में लोगों को नैतिक पागलपन के हवाले करके। और हम इसे रोमियों अध्याय एक के अगले भाग में देखने जा रहे हैं।

यह रोमन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह सत्र संख्या 3, रोमियों 1:2-17 है।